

---

shivAShTakam 4

शिवाष्टकम् ४

Document Information



---

Text title : shivAShTakam 4

File name : shivAShTakam4.itx

Category : aShTaka, shiva

Location : doc\_shiva

Transliterated by : PSA Easwaran

Proofread by : PSA Easwaran

Description-comments : Devi book stall, Kodumgallur, Kerala

Source : Sthothra Rathnaakaram, edited by N. Bappuravu, 2010

Latest update : August 6, 2016

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

January 7, 2022

*sanskritdocuments.org*



शिवाष्टकम् ४



जय शङ्कर शान्त शशाङ्करुचे रुचितार्थद सर्वद सर्वरुचे ।  
शुचिदत्तगृहीतमहोपहृते हृतभक्तजनोद्धततापतते ॥ १ ॥

ततसर्वहृदम्बरवरदनुते नतवृजिनमहावनदाहकृते ।  
कृतविविधचरित्रतनो सुतनो तनु विशिखविशोषणधैर्यनिधे ॥ २ ॥

निधनादिविवर्जितकृतनतिकृत्कृतविहितमनोरथपन्नगभृत् ।  
नगभर्तृसुतार्पितवामवपुः स्ववपुःपरिपूरितसर्वजगत् ॥ ३ ॥

त्रिजगन्मयरूप विरूपसुदृग्गुदञ्चनकिञ्चनकृद्भुतभुक् ।  
भवभूतपते प्रमथैकपते पतितेष्वतिदत्तकरप्रसृते ॥ ४ ॥

प्रसृताखिलभूतलसंवरणप्रणवध्वनिसौधसुधांशुधर ।  
गिरिराजकुमारिकया परया परितः परितुष्ट नतोऽस्मि शिव ॥ ५ ॥

शिव देव महेश गिरीश विभो विभवप्रद शर्व शिवेश मृड ।  
मृडयोडुपतीध्रजगत्त्रितयं कृतयन्त्रण भक्तिविघातकृताम् ॥ ६ ॥

न कृतान्तत एष विभेमि हर प्रहराशु ममाघममोघमते ।  
न मतान्तरमन्यमवैमि शिवं शिवपादनतेः प्रणतोऽस्मि ततः ॥ ७ ॥

विततेऽत्र जगत्यखिलाघहरं परितोषणमेव परं गुणवत् ।  
गुणहीनमहीनमहावलयं लयपावकमीश नतोऽस्मि ततः ॥ ८ ॥

इति स्तुत्वा महादेवं विररामाङ्गिरःसुतः ।  
व्यतरच्च महादेवः स्तुत्या तुष्टो वरान् बहून् ॥ ९ ॥

इति शिवाष्टकं समाप्तम् ॥



*shivAShTakam 4*

pdf was typeset on January 7, 2022



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

